अध्याय 38

यहूदा और तामार

यहूदा और तामार की कहानी यूसुफ़ की कहानी में एक अन्तराल है। पहली दृष्टि में, यह यहाँ पर उपयुक्त होती दिखाई नहीं देती; परन्तु कुलपति इतिहास के उत्पत्ति विवरण में इस कहानी का यही उपयुक्त स्थान है। यदि यह कहानी यूसुफ़ की कहानी से पहले न जोड़ी जाती तो यह कालक्रम के अनुसार अव्यवस्थित होती। अध्याय 37 में, यहूदा एक अविवाहित व्यक्ति था जो अपने घर में रहता था और अपने पिता के लिए काम करता था, याकूब की भेड़ बकरियों की चरवाही करता था। जब तक इस अध्याय में यह वर्णन किया गया, यहूदा घर छोड़ने, विवाह करने की आयु तक पहुँच गया था और पत्नी के द्वारा वैध पुत्रों का पिता बना।

यहूदा की कहानी विचित्र और अनैतिक है और हम बड़े हैरान हो रहे होंगे कि क्यों इसे उत्पत्ति में रखा गया। बाइबल के कई चरित्रों की तरह, परमेश्वर ने अपने सामर्थी हाथ के कार्य को प्रकट करने के लिए यहूदा को दोष को हमें दिखने दिया। परमेश्वर की "समर्थ में निर्बलता में सिद्ध होती है" (2 कुरि. 12:9)। याकूब के पुत्रों की कहानी में, हम देखते हैं कैसे परमेश्वर की पूर्व दृष्टि कैसे-कैसे चरित्र उत्पन्न कर सकी। यहूदा के हृदय और जीवन में बदलाव हुए और यूसुफ़ के जीवन में भी। यदि हमें उत्पत्ति में कहानी के अन्त का मूल्यांकन पता लगाना है तो हमें कहानियों के आरम्भ को देखना आवश्यक है।

यहूदा का एक कनानी स्त्री से विवाह और उनके पुत्र (38:1-5)

[1]उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ, कि यहूदा अपने भाइयों के पास से चला गया, और हीरा नाम एक अदुल्लामवासी पुरुष के पास डेरा किया। [2]वहां यहूदा ने शूआ नाम एक कनानी पुरुष की बेटी को देखा; और उसको ब्याह कर उसके पास गया। [3]वह गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और यहूदा ने उसका नाम एर रखा। [4]और वह फिर गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उसका नाम ओनान रखा गया। [5]फिर उसके एक पुत्र और उत्पन्न हुआ, और उसका नाम शेला रखा गया: और जिस समय इसका जन्म हुआ उस समय यहूदा कजीब में रहता था।

आयत 1. यूसुफ़ के मिस्र जाने के कुछ समय के बाद (37:36), **यहूदा** ने

अपने पिता और **भाइयों** को छोड़ दिया। वह हेब्रोन के उत्तर पश्चिम 12 मील दूर अदुल्लाम नगर में चला गया। वहाँ वह **हीरा** नामक कनानी के घर में रहा, इस अध्याय के अलावा उसके विषय में और कहीं भी कोई जानकारी नहीं है।

आयत 2. जब वह वहाँ पर था, **यहूदा ने कनानियों की एक पुत्री को देखा जिसका नाम शूआ था** और उसको "लिया" यह इब्रानी शब्द לָקַח *(लकाच)* अपनी पत्नी कर लिया जिसका सामान्य अर्थ है उससे "विवाह" किया (4:19; 11:29; 24:67; 25:1)। परन्तु जब दो क्रियाएँ "देखा" और "लिया" एक साथ प्रयोग होती है, इसका अर्थ है अवैध रूप से लेना (3:6; 6:2; 12:15; 34:2; 2 शमूएल 11:2, 4)। यह इस बात को प्रकट करता है कि वह सम्बन्ध शारीरिक वासना[1] पर आधारित था।

यहूदा का एक कनानी स्त्री से विवाह करना अब्राहम के इसहाक के लिए कनानी से विवाह करने की मनाही के सीधा विपरीत था (24:3)। रिबका और इसहाक के मन की चिन्ता थी कि कहीं याकूब किसी स्थानीय कनानी स्त्री से विवाह न कर ले (27:46-28:1; देखें 26:34, 35; 36:2)। परन्तु, बाइबल अंश याकूब की उस इच्छा के विषय कुछ नहीं बताती, जो उसकी अपने पुत्रों की पत्नियों के विषय में थी। हो सकता है इसे न लिए जाने का कारण कुलपति का अपने पुत्रों के जीवन में प्रभाव की कमी रहा हो। दीना के भ्रष्ट किए जाने, शकेम के पुरुषों के घात और यूसुफ़ के खो जाने के बाद, अपने पुत्रों के व्यवहार पर याकूब का नियन्त्रण हट गया था। उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से विवाह की आशीष में उसके समर्थन को नहीं चाहा और यदि उसने उनको इस विषय में कोई बात कही भी होगी तो उन्होंने उस पर ध्यान नहीं दिया।

आयतें 3-5. लेखक बार बार "गर्भधारण" और "जन्म दिया" का प्रयोग करता है जिसका अर्थ है कि यहूदा की पत्नी ने उसके तीन पुत्रों को एक के बाद एक शीघ्रता से जन्म दिया। हम पढ़ते हैं, **वह गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और यहूदा ने उसका नाम एर रखा** (38:3)। तब बाइबल अंश बताता है कि **वह फिर गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उसका नाम ओनान रखा गया** (38:4)। जब **फिर उसके एक पुत्र और उत्पन्न हुआ, और उसका नाम शेला रखा गया**, बाइबल में अंश में जोड़ा गया है **और जिस समय इसका जन्म हुआ उस समय यहूदा कजीब में रहता था** (38:5)। कजीब का पुराना नाम अकजीब है जो अदुल्लाम की पश्चिम दिशा में कुछ दूरी पर स्थित था (यहोशू 15:44; मीका 1:14)।[2]

दो पतियों के साथ तामार की दुर्गति (38:6-11)

[6]और यहूदा ने तामार नाम एक स्त्री से अपने जेठे एर का विवाह कर दिया। [7]परन्तु यहूदा का वह जेठा एर यहोवा के लेखे में दुष्ट था, इसलिये यहोवा ने उसको मार डाला। [8]तब यहूदा ने ओनान से कहा, अपनी भौजाई के पास जा, और उसके साथ देवर का धर्म पूरा करके अपने भाई के लिये सन्तान उत्पन्न

कर। 9ओनान तो जानता था कि सन्तान तो मेरी न ठहरेगी: सो ऐसा हुआ, कि जब वह अपनी भौजाई के पास गया, तब उसने भूमि पर वीर्य गिराकर नाश किया, जिस से ऐसा न हो कि उसके भाई के नाम से वंश चले। 10यह काम जो उसने किया उसे यहोवा अप्रसन्न हुआ: और उसने उसको भी मार डाला। 11तब यहूदा ने इस डर के मारे, कि कहीं ऐसा न हो कि अपने भाइयों की नाईं शेला भी मरे, अपनी बहू तामार से कहा, जब तक मेरा पुत्र शेला सियाना न हो तब तक अपने पिता के घर में विधवा की बैठी रह, सो तामार अपने पिता के घर में जा कर रहने लगी।

आयत 6. भले ही **यहूदा** ने अपने पिता की सहमति या आशीर्वाद के बिना अपने लिए पत्नी चुनी, उसने अपने पुत्र के साथ भिन्न तरीके से व्यवहार किया। जब उसके **जेठे एर** के विवाह का समय आया, यहूदा ने **विवाह** करने की प्राचीन प्रथा का ही अनुसरण किया और उसके लिए पत्नी ले आया (देखें 21:21; 24:3, 4; 34:4)। उसका **नाम तामार** था, परन्तु उसके कनानी होने की पृष्ठभूमि होने के विषय कोई जानकारी नहीं दी गई है।

आयत 7. एर, उसका नया पति, **यहोवा के लेखे में दुष्ट था**; हालाँकि उसके विशिष्ट पापों की कोई सूची दी गई है, कि वह इतने गम्भीर थे कि **यहोवा ने उसको मार डाला।** शब्द "दुष्ट" पर्याप्त रूप से कठोर नहीं हो सकता। इस संदर्भ में परमेश्वर के सामने उसकी की गहराई को दर्शाने के लिए शब्द רַע *(ra)* "भ्रष्ट" (NIV; NRSV) का प्रयोग होना चाहिए।[3]

कुछ लोगों ने इसे घोर दण्ड कहा है जो परमेश्वर के चरित्र में दोष के रूप में प्रकट हुआ है। परन्तु पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है कि परमेश्वर हमारा बनाने वाला हैः वह जीवन देता है, और उसे लेने का भी विशेषाधिकार है (अय्यूब 1:21)। सब पापी हैं (रोमियों 3:23), और सभी मृत्यु के हकदार हैं क्योंकि "पाप की मज़दूरी मृत्यु है" (रोमियों 6:23)। क्योंकि परमेश्वर दयालु हैं, वह अधिकांश मानव जाति को जीने देता है; वह "नहीं चाहता, कि कोई नाश (शारीरिक रूप से या आत्मिक रूप से) हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले" (2 पतरस 3:9)। हमारा प्रेमी स्वर्गीय पिता कभी नहीं चाहता कि किसी व्यक्ति का नाश हो, क्योंकि सभी उसी के स्वरूप में बनाए गए हैं। एर के सम्बन्ध में परमेश्वर ने नहीं चाहा कि वह दण्ड से मुक्ति के साथ पाप करता रहे। सम्भवतः परमेश्वर ने उसके जीवन में छुटकारे के गुण को नहीं देखा, और उसका हृदय पाप में इतना कठोर था कि वह पश्चाताप करने की सीमा से बाहर चला गया था।

मात्र दुष्टता की असामान्य स्थितियों में ही परमेश्वर किसी व्यक्ति के प्राण लेता है, और इन मामलों में लोगों को निंदनीय दुष्टता[4] में जीवन व्यतीत करने की गम्भीरता को महसूस करवाने के लिए ऐसा सख्त कदम उठाया। एर की मृत्यु मात्र एक उचित दण्ड ही नहीं था परन्तु यह एक सबक भी था जो उसके भाई ओनान, यहूदा के दूसरे पुत्र को मानना चाहिए था जिसे अपने दुष्ट व्यवहार और जीवन शैली के विषय में सोचना था।

आयत 8. ओनान के मन में चाहे कुछ भी था, उसने प्रत्यक्ष रूप से उस सम्भावना का तीखा अनुभव मन में नहीं किया जो एर की मृत्यु में ईश्वरीय चेतावनी थी। जैसे विवरण आगे बढ़ता है, यहूदा ने उससे कहा, **अपनी भौजाई के पास जा, और उसके साथ देवर का धर्म पूरा करके अपने भाई के लिये सन्तान उत्पन्न कर।** आज इस तरह का आदेश बड़ा ही अजीब जान पड़ता है; परन्तु यह विवाह नियम के देवर-धर्म (लेविरैट)[5] के साथ जुड़ा हुआ था जो कि मूसा की व्यवस्था से पहले प्राचीन मध्य पूर्व में किया जाता था। वैसे, निःसंतान विधवा अपने देवर के साथ विवाह की आशा करेगी।[6] मूसा की व्यवस्था में दूसरी बार विवाह करने का उद्देश्य उसके मरे हुए पति के लिए वारिस उत्पन्न करना था, "जिस से कि उसका नाम इस्राएल में से मिट न जाए" (व्यव. 25:6)। प्राचीन खेतीबाड़ी वाले समाज में यह विशेष रूप से ज़रूरी था क्योंकि ज़मीन जायदाद की विरासत पुरुष वारिस को जाती थी और पहलौठा पुत्र अपने पिता की जायदाद से दोगुना भाग प्राप्त करता था। परिवार की महिला सदस्या जैसे कि तामार, अपने पति के द्वारा ही वारिस हो सकती थी; इसलिए, नियम के आधार पर, उसके देवर के द्वारा उससे जनमा पुत्र एर, उसके मृतक पति की संतान गिना जाएगा। इस तरह से न केवल विरासत को बचा कर रखा जाता था परन्तु उसकी विधवा को ज़मीन और/या जायदाद के द्वारा बुढ़ापे में सुरक्षा दी जाएगी।

आयत 9. यहूदा के दूसरे पुत्र ने भी चरित्र की कमी को प्रदर्शित किया। उसने स्वार्थवश अपने पिता के आदेश के पहले भाग का लाभ उठाता रहा दूसरे भाग का पालन किए बिना। उसके इस व्यवहार का कारण स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया हैः **ओनान तो जानता था कि सन्तान तो मेरी न ठहरेगी; सो ऐसा हुआ, कि जब वह अपनी भौजाई के पास गया, तब उस ने भूमि पर वीर्य गिराकर नाश किया, जिस से ऐसा न हो कि उसके भाई के नाम से वंश चले।** "जब" की बजाय कई संस्करणों ने इब्रानी शब्द אִם *(अम)* का अनुवाद "जब भी" के रूप में किया है (NIV; NRSV; NJPSV; REB; NLT; ESV), जिसका अर्थ है कि ओनान ने तामार के साथ कई बार संसर्ग किया परन्तु हर बार "अपना वीर्य धरती पर गिराकर नष्ट कर देता" और अपने मृतक भाई के लिए संतान उत्पन्न करने से इनकार करता। ओनान ने तामार के साथ घिनौना व्यवहार किया उसको भोग की वस्तु ही समझा जिससे वह कानूनन अपनी वासना पूरी कर सकता था। उसके मन में ऐसा कोई इरादा नहीं था कि तामार के पुत्र उत्पन्न हो जो उसके बड़े भाई की संतान कहलाए। ओनान का पाप जन्म नियंत्रण नहीं था जैसा कि कुछ लोगों ने गलत दावा किया। इसके बजाय उसका पाप एर की विरासत को लेना था जो उसकी भाभी के पहलौठे पुत्र को मिलना था और वह अपने देवरधर्म के कर्तव्य को निभाने में विफल रहा।

आयत 10. ओनान के इन घृणत कार्यों से **यहोवा अप्रसन्न हुआ।** उसके अपस्वार्थी व्यवहार ने परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य का सीधा विरोध किया। उसने अपने बड़े भाई की अचानक हुई मृत्यु से कोई सबक नहीं सीखा क्योंकि उसने सोचा कि दण्ड से मुक्ति के साथ वह पाप कर सकेगा। इसलिए परमेश्वर ने

उसको भी मार डाला।

आयत 11. यहूदा अपने दोनों पुत्रों की अचानक हुई मृत्यु के कारण के प्रति लापरवाह था। याकूब अपने पुत्रों के मन में सच्चाई और धार्मिकता की ज़रूरत को डालने में असफल रहा और यहूदा ने भी अपने परिवार में उसी गलती को दोहराया, उसकी वही गलती, **बहू तामार** के साथ ओनान के दुर्व्यवहार की ओर ले गई। अपने दोगुनी हानि पर विचार करते हुए उसने अपनी बहू को कहा, **"जब तक मेरा पुत्र शेला सियाना न हो तब तक अपने पिता के घर में विधवा ही बैठी रह।"** उसने अपने आखिरी पुत्र के द्वारा उसको भविष्य में वारिस देने की प्रतिज्ञा दी; परन्तु उसने अपने मन में विचार किया, "**कहीं ऐसा न हो कि अपने भाइयों के समान शेला भी मरे।"** यदि शेला मर जाए तो उसका वंश ही नाश हो जाएगा। यहूदा अपने बड़े पुत्रों की मृत्यु के कारण को समझने में विफल रहा। दोनों अपनी ही दुष्टता के कारण से मरे थे; परन्तु उसने किसी न किसी तरह से इसके लिए तामार को ही ज़िम्मेदार ठहराया, जैसे कि वह किसी श्राप के अधीन है।

इस बात से अचेत कि यहूदा के वचन तामार लिए पाखण्डी और कुटिल शब्द थे, **तामार** ने वही किया जो यहूदा ने उसे कहाः सो तामार **अपने पिता के घर में जाकर रहने लगी** (देखें लैव्य. 22:13; रूत 1:8)। ऐसा करने से, यहूदा उसे कोई आर्थिक सहयोग देने से मुक्त हो गया था।

यहूदा का पाप और तामार की चालाकी (38:12-23)

[12]बहुत समय के बीतने पर यहूदा की पत्नी जो शूआ की बेटी थी सो मर गई; फिर यहूदा शोक से छूटकर अपने मित्र हीरा अदुल्लामवासी समेत अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतराने के लिये तिम्नाथ को गया। [13]और तामार को यह समाचार मिला, कि तेरा ससुर अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतराने के लिये तिम्नाथ को जा रहा है। [14]तब उसने यह सोच कर, कि शेला सियाना तो हो गया पर मैं उसकी स्त्री नहीं होने पाई; अपना विधवापन का पहिरावा उतारा, और घूंघट डाल कर अपने को ढांप लिया, और एनैम नगर के फाटक के पास, जो तिम्नाथ के मार्ग में है, जा बैठी: [15]जब यहूदा ने उसको देखा, उसने उसको वेश्या समझा; क्योंकि वह अपना मुंह ढ़ापे हुए थी। [16]और वह मार्ग से उसकी ओर फिरा और उससे कहने लगा, मुझे अपने पास आने दे, (क्योंकि उसे यह मालूम न था कि वह उसकी बहू है)। और वह कहने लगी, कि यदि मैं तुझे अपने पास आने दूं, तो तू मुझे क्या देगा? [17]उसने कहा, मैं अपनी बकरियों में से बकरी का एक बच्चा तेरे पास भेज दूंगा। तब उसने कहा, भला उस के भेजने तक क्या तू हमारे पास कुछ रेहन रख जाएगा? [18]उस ने पूछा, मैं तेरे पास क्या रेहन रख जाऊं? उस ने कहा, अपनी मुहर, और बाजूबन्द, और अपने हाथ की छड़ी। तब उसने उसको वे वसतुएं दे दीं, और उसके पास गया, और वह उससे गर्भवती हुई। [19]तब वह उठ कर चली गई, और अपना घूंघट उतार के अपना विधवापन का पहिरावा फिर पहिन लिया। [20]तब यहूदा ने बकरी का बच्चा अपने मित्र उस अदुल्लामवासी के

हाथ भेज दिया, कि वह रेहन रखी हुई वस्तुएं उस स्त्री के हाथ से छुड़ा ले आए; पर वह स्त्री उसको न मिली। 21तब उसने वहां के लोगों से पूछा, कि वह देवदासी जो एनैम में मार्ग की एक और बैठी थी, कहां है? उन्होंने कहा, यहां तो कोई देवदासी न थी। 22सो उसने यहूदा के पास लौट के कहा, मुझे वह नहीं मिली; और उस स्थान के लोगों ने कहा, कि यहां तो कोई देवदासी न थी। 23तब यहूदा ने कहा, अच्छा, वह बन्धक उस के पास रहने दे, नहीं तो हम लोग तुच्छ गिने जाएंगे: देख, मैं ने बकरी का यह बच्चा भेज दिया, पर वह तुझे नहीं मिली।

आयत 12. यह भाग, अक्षरशः में, "बहुत दिनों के बाद" आरम्भ होता है, जिसका अर्थ कि **बहुत समय** बीत गया था। तामार के लिए काफ़ी समय गुज़र चुका था जो अपने पिता के घर में वापिस आ गई थी, वह समझ गई थी कि यहूदा का अपना आखिरी पुत्र उसे पति के रूप में देने में कोई इरादा नहीं है। इसी समय के दौरान, **यहूदा की पत्नी जो शूआ की बेटी** थी सो मर गई। **शोक के दिन बीतने** पर, **यहूदा अपने मित्र हीरा अदुल्लामवासी** के साथ **तिम्नाथ** को गया, जो बैतलहम के पश्चिम में दस मील की दूरी पर था और अदुल्लाम के उत्तर-पश्चिम में चार मील दूर। यह वसंत का मौसम था जब चरवाहे उस क्षेत्र में भेड़-बकरियों की ऊन कतरने के लिए एकत्र होते थे (31:19 पर टिप्पणी को देखें), और जैसे कि यहूदा भेड़-बकरियों का मालिक था, तो उसके लिए यह ज़रूरी था कि वह अपने दासों को देखे। ऊन कतरने में बहुत मेहनत लगती थी, परन्तु यह काम पूरा होने के बाद सारे कर्मी आनन्द का उत्सव मनाते थे (देखें 1 शमूएल 25:2-38; 2 शमूएल 13:23-29)।

आयतें 13, 14. तामार को समाचार मिला कि उसका **ससुर अपनी भेड़-बकरियों की ऊन कतरनेवालों के पास तिम्नाथ को जा रहा है।** इस स्थिति को लेकर तामार क्या समझी होगी? यहूदा के विषय उसने क्या जाना होगा? वह जानती थी कि अब वह यौन प्रलोभन की चपेट में होगा, क्योंकि उसकी पत्नी को मरे काफ़ी समय हो चुका था; वह वेश्याओं के संप्रदाय (देखें 38:21)[7] से जागरूक थी, जो स्वयं को इस समय पुरुषों के लिए उपलब्ध रखती थीं, जैसे कि इस ऊन कतरने के उत्सव पर, जहाँ बहुत सारी शराब पी जाती थी। इसलिए, अपनी पहचान को छिपाने के लिए **तामार ने अपना विधवापन का पहिरावा उतारा, और घूंघट डालकर अपने को ढांप लिया।**

स्त्रियों के घूंघट डालने की प्रथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर भिन्न हो सकती थी और प्राचीन मध्य पूर्व में सदियों में बदलती रहती थी। मध्य अश्शूरी कानून (लगभग 1500-1200 ई.पू.) के अनुसार, स्वतंत्र अश्शूरी पुरुष की पुत्रियों, पत्नियों और उपपत्नियों, इसके साथ ही साथ विवाहित देवदासियों को सार्वजनिक रूप में घूंघट डालना होता था। परन्तु, अविवाहित देवदासियों और सामान्य वेश्याएँ बिना घूंघट डाले रह सकती थीं।[8] जबकि कनान देश में कुलपति के समय में कैसी संस्कृति रही होगी यह कुछ अज्ञात ही है, कम से कम कुछ स्त्रियों से खुले आम घूंघट डालने की आशा की जाती थी।[9] इस बात पर ज़ोर

दिया गया है कि तामार के घूंघट डालने का कारण स्वयं को वेश्या प्रस्तुत करना नहीं था, परन्तु स्वयं को यहूदा से छिपाने के लिए ऐसा किया गया।[10] परन्तु पद 15 भिन्न प्रकार से बताता है। वह सचमुच ही अपने ससुर से अपनी पहचान छिपाना चाहती थी, परन्तु वह निश्चित रूप से स्वयं को वेश्या के रूप में दिखाना चाहती थी। इसी तरह से यहूदा ने उसके भेष को समझ लिया जैसा कि निम्नलिखित घटनाएँ प्रकट करती हैं।

पहली, तामार ने स्वयं को ऐसे स्थान रखा जहाँ कोई भी मान सम्मान वाली युवा स्त्री नहीं बैठती; **एनैम नगर के फाटक के पास, जो तिम्नाथ के मार्ग में है,** जा बैठी। एनैम के फाटक के बजाय अंग्रेजी के कुछ संस्करणों के अनुवाद में लिखा है "खुले स्थान पर" (KJV; NKJV) या "जहाँ राह विभाजित होती है" (NEB; REB)। परन्तु अधिकांश संस्करण NASB के अनुवाद के साथ सहमत होते हैं कि इस वाक्य में एक नाम हासिल है। पुराना नियम में "एनैम" मात्र इसी संदर्भ में प्रकट होता है (38:14, 21), परन्तु यह "एनाम" के ज़्यादा तुल्य दिखाई देता है जिसका वर्णन यहोशू 15:34 में किया गया है। तामार ने समझ लिया था कि ऊन कतरने वालों के पास जाते हुए यहूदा "एनैम के फाटक से" उसके पास से गुज़रेगा।

तामार के इस खुल्लमखुल्ला कार्य का निश्चित कारण यह था कि **शेला**, तीसरा पुत्र था, जो **बड़ा हो गया था और वह उसे पत्नी होने के लिए नहीं दी गई थी** (देखें 38:11)। वह जानती थी कि यहूदा ने उसे धोखा दिया है और उसने निर्णय लिया कि पुत्र जनने की एकमात्र उम्मीद अपने ससुर को बहकाने के द्वारा थी, जिससे वह पुत्र एर का जाना जाए (जो उसके नाम और वंश को बनाए रखे)।

जबकि इस तरह का सम्बन्ध (एक बहू का अपने ससुर के साथ) आधुनिक पाठकों के लिए यह बड़ा दुख पहुँचाने वाला है, प्राचीन मध्य पूर्व में लेविरैट की व्यवस्था को बनाए रखना था। यह कर्तव्य सबसे पहले मृतक के भाइयों का बनता था, "बड़े पुत्र से लेकर छोटे तक"[11] या जिसे ससुर चुने। परन्तु, यदि यह सब विकल्प न उपलब्ध हों तो यह परिवार के अन्य सदस्य पर ज़िम्मेदारी आती है, जिसमें ससुर भी शामिल है।[12] सामान्य परिस्थितियों के अंतर्गत, इस तरह का सम्बन्ध निषेध था। असल में, एक पुरुष और उसकी बहू के बीच यौन सम्बन्ध मूसा की व्यवस्था में मृत्युदण्ड योग्य अपराध था (लैव्य. 20:12)।

आयतें 15, 16. जैसे ही **यहूदा ने उसको देखा, उस ने उस को वेश्या समझा; क्योंकि वह अपना मुंह ढांपे हुए थी**। उसने ऐसा इसलिए नहीं समझा कि वह मात्र ऐसे स्थान पर बैठी हुई थी परन्तु उसका चेहरा घूंघट से ढका हुआ था। इसलिए **वह मार्ग से उसकी ओर फिरा**, उसका पता नहीं था कि वह उसकी बहू है; और बिना किसी अन्य वार्ता के उसने उसी क्षण उसे अपने पास आने के लिए यह प्रस्ताव रखा, **मुझे अपने पास आने दे,** वह उससे जबाव में कहने लगी: **यदि मैं तुझे अपने पास आने दूं, तो तू मुझे क्या देगा?**

आयत 17. यहूदा ने उसे **बकरियों में से बकरी का बच्चा देने** का प्रस्ताव रखा। एक पुरुष के लिए वेश्या के साथ पल भर के शारीरिक सुख के लिए इतना

मूल्य आशा से बढ़कर था। नीतिवचन 6:26 के अनुसार वेश्या का नियमित मूल्य जो कोई समझता था "रोटी का टुकड़ा" (देखें ESV)। बकरी के बच्चे के मूल्य का उदाहरण शिमशोन की कहानी में प्रत्यक्ष है, जो अपनी पलिश्ती पत्नी के पास अपने रिश्तों को सुधारने के लिए लाया था (न्यायियों 15:1)। यहूदा सम्भवतः जानता था कि यह युवा स्त्री उसके प्रस्ताव को इससे कहीं कम में मान लेती; परन्तु प्रत्यक्ष रूप से वह सौदेबाज़ी में नहीं पड़ना चाहता था इसलिए उसने उसके सामने यह उदार प्रस्ताव रख दिया।

क्योंकि अब उसके पास बकरी का बच्चा तो था नहीं और उसी समय भुगतान नहीं कर सकता था, तामार ने पूछा, **जब तक तुम भुगतान नहीं करते तब तक मुझे रेहन में कुछ रख जाओगे?** उधार करने वाले के लिए रेहन रखना आम प्रथा थी जब तक कि वह उपयुक्त भुगतान नहीं करता (देखें निर्गमन 22:26; व्यव. 24:6, 10-13, 17; अय्यूब 22:6; 24:3, 9; आमोस 2:8)।

आयत 18. यहूदा ने उत्तर दिया, **मैं तेरे पास क्या रेहन रख जाऊं?** तामार सम्भवतः अपने प्रत्याशित प्रश्न को जान गई थी, उसने शीघ्रता से उत्तर दिया, **अपनी मुहर, और बाज़ूबन्द, और अपने हाथ की छड़ी।** वह जानती थी यहूदा भेड़-बकरियों का मालिक धनवान व्यक्ति था और व्यक्तिगत रूप से उन पर पहचान की उत्कीर्ण मुहर होगी। इस तरह की प्राचीन मध्य पूर्व में दो प्रकार की मुहरें पाई जाती थीं, कुलपति के समय में। यह मुहरें धातु या पत्थर की बनी होती थीं। एक प्रकार की बेलनाकार की मुहर जो मालिक के गले में लटकाई जाती थी। दूसरी छाप लगी मुहर होती थी, जो कि अँगूठी के भाग के रूप में बनाई जाती थी। दोनों के ऊपर नरम मिट्टी से छाप लगाई जाती थी। प्रत्येक मुहर मालिक के लिए अनूठी होती थी (41:42; निर्गमन 28:11; 1 राजा 21:8; एस्तेर 3:10-12; यिर्म. 22:24)। चरवाहे के लिए एक छड़ी कई कामों के लिए प्रयोग की जाती थी परन्तु यहूदा की छड़ी अधिकार का प्रतीक थी और इसमें कोई शक नहीं कि उस पर मालिक का निशान भी होगा (देखें गिनती 17:2)। यहूदा ने बिना किसी झिझक के, अपनी मुहर और बाजुबन्द और हाथ की छड़ी तामार रेहन के रूप में दे दी **और उसके पास गया, और वह उस से गर्भवती हुई।**

आयत 19. अब वह अपनी चालबाज़ी को लागू करने में सफल हो गई थी, तामार ने उस स्थान को छोड़ दिया और साहस करते हुए अपने पिता के घर में आ गई। वहाँ, उसके लिए **अपने घूंघट** को हटाना और अपने भेष को उतारना आसान था जिसको संभवतः तिम्नाथ की राह पर उसके गुप्त रूप को देख लिया होगा। उसके गुप्त कार्य के साथ, **उसने अपने विधवा के वस्त्र पहन लिए** और अगले तीन महीनों तक उसने विधवा के रूप में विलाप करने का अभिनय किया।

आयत 20. यहूदा अपने **रेहन** को छुड़ाने के विषय में चिन्तित था, क्योंकि वे चीजें उसके लिए बड़ी मूल्यवान थीं। इसलिए **उसने बकरी का बच्चा अपने मित्र उस अदुल्लामवासी के हाथ भेज दिया**, बाइबल अंश इस बात को प्रकट नहीं करता कि उसने हीरा को रेहन छुड़ाने के लिए क्यों भेजा (देखें 38:1, 12)। सम्भवतः एक इस्राएली होने के नाते वेश्या के पास जाकर बातचीत करने से वह

घबराया हुआ था। बकरी का बच्चा पूर्ण भुगतान के रूप में उस स्त्री को दिया जाना था, परन्तु वह वहाँ कहीं नहीं मिली।

आयत 21. यहूदा ने जिस **स्थान** पर जाने के लिए उसे कहा था, हीरा ने वहाँ पहुँचकर वहाँ के **लोगों से** पूछा, **वह देवदासी कहाँ जो एनैम के मार्ग पर बैठी थी?** इस संदर्भ में प्रयोग किए गए शब्द के अनुसार, यहूदा ने तामार के लिए सोचा कि वह कोई आम वेश्या है זוֹנָה *(ज़ोनाह;* 38:15); हीरा का प्रश्न "देवदासी" קְדֵשָׁה *(एदेशाह)* के सम्बन्ध में था। कनान देश की संस्कृति में, देवदासियों को यौन सम्बन्ध बनाने वाली आम वेश्याओं से बढ़कर आदर की दृष्टि से देखा जाता था। अनैतिकता के प्रश्न की परवाह किए बिना नगर के लोगों ने उत्तर दिया, "यहां तो कोई देवदासी न थी।"

आयत 22. एक असफल खोज के बाद, **हीरा यहूदा के पास वापिस आ गया** और बताया कि उसे **वह वहाँ नहीं मिली**। उसने कहा कि वे लोग जो वहाँ रहते हैं उन्होंने बताया, **कि यहां तो कोई देवदासी न थी।**

आयत 23. इससे **यहूदा** ने निर्णय किया कि खोज न ही की जाए और अच्छा है मुहर, बाजूबन्द और छड़ी उसके **पास ही रहे**। यदि वह नगर में लोगों से पूछता फिरा तो लोग उसे मूर्ख समझेंगे कि किस तरह से एक युवा स्त्री ने उससे चालबाज़ी की है। वह **जग हंसाई** בּוּז *(बुज़)* नहीं चाहता था, ऐसा व्यक्ति जिसे प्रधान और अभिमानी लोग उसे तुच्छ दृष्टि से देखें (नहेम्य. 4:4; भजन 123:3, 4)। उसने स्वयं को अपनी ज़िम्मेदारी से दोषमुक्त करने का प्रयास करते हुए अपने मित्र हीरा से कहा, **देख, मैं ने बकरी का यह बच्चा भेज दिया, पर वह तुझे नहीं मिली।** इस लापरवाही ने तामार के लिए अपनी शेष योजना की तैयारी का मार्ग खोल दिया।

यहूदा का अंगीकार और तामार की पुष्टि (38:24-30)

[24]और तीन महीने के पीछे यहूदा को यह समाचार मिला, कि तेरी बहू तामार ने व्यभिचार किया है; वरन वह व्यभिचार से गर्भवती भी हो गई है। तब यहूदा ने कहा, उसको बाहर ले आओ, कि वह जलाई जाए। [25]जब उसे बाहर निकाल रहे थे, तब उसने, अपने ससुर के पास यह कहला भेजा, कि जिस पुरुष की ये वस्तुएं हैं, उसी से मैं गर्भवती हूं; फिर उसने यह भी कहलाया, कि पहिचान तो सही, कि यह मुहर, और बाजूबन्द, और छड़ी किस की है। [26]यहूदा ने उन्हें पहिचान कर कहा, वह तो मुझ से कम दोषी है; क्योंकि मैं ने उसे अपने पुत्र शेला को न ब्याह दिया। और उसने उससे फिर कभी प्रसंग न किया। [27]जब उसके जनने का समय आया, तब यह जान पड़ा कि उसके गर्भ में जुड़वे बच्चे हैं। [28]और जब वह जनने लगी तब एक बालक ने अपना हाथ बढ़ाया: और धाय ने लाल सूत ले कर उसके हाथ में यह कहते हुए बान्ध दिया, कि पहिले यही उत्पन्न हुआ। [29]जब उसने हाथ समेट लिया, तब उसका भाई उत्पन्न हो गया: तब उस धाय ने कहा, तू क्यों बरबस निकल आया है? इसलिये उसका नाम पेरेस रखा

गया। 30पीछे उसका भाई जिसके हाथ में लाल सूत बन्धा था उत्पन्न हुआ, और उसका नाम जेरह रखा गया।

आयत 24. लगभग तीन महीने बीत जाने के बाद, **तामार** प्रत्यक्ष स्पष्ट रूप से दर्शा रही थी और यह प्रत्येक व्यक्ति पर प्रकट हो गया कि वह गर्भवती है। किसी ने **यहूदा** को संदेश भेजा कि उसकी **बहू** ने **व्यभिचार** किया है। जिसने भी यहूदा को यह संदेश दिया उससे यही समझ लिया गया कि तामार **व्यभिचार से गर्भवती** हुई है। फिर भी यहूदा ने अपनी बहू के अवैध गर्भधारण पर विश्वास किया और यहूदा के अनुसार उस पर कानूनी कार्यवाही करने का निर्णय लेना उचित था। भले ही यहूदा ने अपनी बहू को दी प्रतिज्ञा को पूरा नहीं किया था, तामार फिर भी उसके तीसरे पुत्र, शेला की मंगेतर थी। लेविरैट व्यवस्था के अनुसार तामार को शेला के पुत्र की माँ बनना था, परन्तु उसे उसके साथ नहीं रहने दिया था और वह किसी अन्य पुरुष से गर्भवती हो गई थी। इसलिए यहूदा ने उसके अपराध की मृत्यु दण्ड की घोषणा कर दी। ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसे उसे पर कानूनी कार्यवाही करने का अधिकार था, **यहूदा** ने आदेश दिया, **"उसको बाहर ले आओ, कि वह जलाई जाए।"**[13]

आयत 25. परन्तु, **जब उसे बाहर निकाला जा रहा था**, तामार ने अपने ससुर को **कहला भेजा।** इस संदेश के साथ कुछ चीजों को भी भेजा गया; और यह कहा गया, **"जिस पुरुष की ये वस्तुएं हैं, उसी से मैं गर्भवती हूँ।"** तामार की यह विनती थी: **"पहिचान तो सही, कि यह मुहर, और वाजूबन्द, और छड़ी किसकी है।"** वह इस बात से चौकस थी कि वह सीधे अपने ससुर पर आरोप न लगाए। इसके बदले में उसने उसको प्रत्यक्ष निष्कर्ष निकालने का अवसर दिया।

आयत 26. यहूदा ने उन वस्तुओं का **पहचान** लिया जो उसने रेहन में उसे दी थीं, और अपने अपराध को माना, और दुःखद अन्याय को टाल दिया। उसने अंगीकार किया, **"वह तो मुझ से कम दोषी है; क्योंकि मैं ने उसे अपने पुत्र शेला को न ब्याह दिया।"** इस कथन का विवरण देते हुए, उत्प्रेरित लेखक ने तामार को उसकी चालबाज़ी और अनैतिक व्यवहार के लिए दोषी नहीं ठहराया। परन्तु, यह स्पष्ट था कि उसका यह इरादा लेविरैट विवाह के उद्देश्य के साथ सुसंगत था। इसके बिलकुल विपरीत, यहूदा ने तामार को शेला पति के रूप में न देने से उनकी व्यवस्था को बिगाड़ने का प्रयास किया। अपनी गलती को महसूस करते हुए, यहूदा ने अपने कार्यों की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली; **उस ने उस से फिर कभी प्रसंग न किया।**

आयतें 27-29. तामार ने **जुड़वे बच्चे** जन्मे (38:37) जो रिबका के एसाव और याकूब के जन्म के समान था (25:22-26)। दोनों ही घटनाओं में, जुड़वां बच्चों ने एक दूसरे में से पहले जन्म लेने के लिए संघर्ष करते हुए मुकाबला किया। दोनों ही स्थितियों में, बड़े बच्चे को दूसरा स्थान ही मिला। विवरण बताता है कि और **जब वह** [तामार] **जनने लगी तब एक बालक ने अपना हाथ बढ़ाया और धाय ने लाल सूत लेकर उसके हाथ में यह कहते हुए बान्ध दिया, "कि पहिले यही**

उत्पन्न हुआ" (38:28)। इस घटना के कारण से, उसे पारिभाषिक रूप से पहलौठा पुत्र माना गया। प्रत्येक के लिए यह हैरानी की बात थी, **उसने** अपनी माँ के पेट में अपना **हाथ समेट लिया**, और **उसका भाई उत्पन्न हो गया** (38:29)। धाय ने ज़ोर से कहा, **"तू क्यों बरबस निकल आया है?"** यह अनोखा जन्म उसके नाम के लिए एक संदर्भ बन गया, **पेरेस**, जिसका अर्थ है "बरबस निकलना" या "तोड़कर बाहर आना।"

आयत 30. पीछे उसका भाई जिसके हाथ में लाल सूत बन्धा था उत्पन्न हुआ। इस जुड़वां का **नाम जेरह रखा** गया जिसका अर्थ है "चमक" सम्भवतः इस कारण कि उसके माता पिता की उससे बड़ी आशाएँ होंगी। न यहूदा और न ही तामार उनके भविष्य को जानते थे कि क्या होने वाला है। जबकि जेरह आकान का पूर्वज था, यहोशू 7:1 अनुसार; पेरेस का वंश राजा दाऊद का था और आखिरकार यीशु मसीह का (रूत 4:18-22; मत्ती 1:1-17)।

अनुप्रयोग

"पितरों का अधर्म" (अध्याय 38)

याकूब और उसके परिवार की कहानी दिखाती है कि कैसे परमेश्वर पितरों के अधर्म को उनकी भावी पीढ़ियों पर ले कर आता है। जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को सीनै पर्वत पर यह कहा था कि वह पितरों के अधर्म को उनके बेटों और पोतों-परपोतों पर तीसरी तथा चौथी पीढ़ी तक लाएगा (निर्गमन 34:7), तो उसका यह तात्पर्य नहीं था कि उन पीढ़ियों को व्यक्तिगत या असंगत ढंग से अपने बाप-दादाओं के पाप के दण्ड को भोगना पड़ेगा। ऐसा दण्ड व्यवस्थाविवरण 24:16 का सीधा सीधा विरोध होता, जो स्पष्ट करता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने ही कार्यों के लिए ज़िम्मेदार होगा। वरन, परमेश्वर का तात्पर्य था कि व्यवहार और जीवनशैली से पितरों के पापों[14] का प्रभाव आने वाली पीढ़ियों पर आएगा। वे प्रभाव लंबे समय तक प्रभावी रह सकते हैं, और अभिभावकों के उदाहरण से प्रेरित होकर उनके बच्चे भी वही पाप कर सकते हैं जो उन्होंने अपनी जवानी में किए थे। झील में फेंके गए पत्थर की तरंगों के समान, पाप के दुष्प्रभाव चारों ओर, अपने उद्गम स्थान से बहुत दूर तक जाते हैं। परमेश्वर का अपने लोगों के पापों को उनके बच्चों और पोतों-परपोतों तक ले कर जाना उनके नाश के लिए नहीं है। इसके विपरीत, यह इसलिए है कि वे सीख सकें कि पाप के परिणाम होते हैं। परमेश्वर सदा ही चाहता है कि जो लोग परीक्षाओं और कठिनाइयों का सामना करें वे अपने कटु अनुभवों से शिक्षा लें और अपने चरित्र का निर्माण करें जिसे वह आशीष देकर संसार के उद्धार के अपने उद्देश्य में प्रयोग कर सके।

याकूब और उसके बेटे। पाप के ज़ारी रहने वाले प्रभावों का उदाहरण हम याकूब में देख सकते हैं, जिसकी परवरिश एक अस्त-व्यस्त परिवार में हुई थी। वह अपनी माता का चहेता था, जबकि एसाव अपने पिता की दुलारी सन्तान

था। याकूब ने इसका लाभ उठाया और अपने भाई तथा पिता को धोखा देकर एसाव का जन्म-अधिकार (25:27-34) और इसहाक से उसकी मरण-शैया से मिलने वाली आशीषें (27:1-40) प्राप्त कर लीं। उसकी बारी में, याकूब के, चार पत्नियाँ और तेरह बच्चे हुए जो ईर्ष्यापूर्वक परिवार में वर्चस्व तथा मान्यता के लिए लड़ते रहे (29:21-30:24)। याकूब के पुत्रों ने शकेम के लोगों की हत्या और दीना के बलात्कार के प्रतिशोध में उस नगर को बर्बाद करने के द्वारा अपने अन्दर सही तथा गलत की कोई विशेष पहचान ना होने को प्रकट किया। याकूब प्रत्यक्षतः उन पर नियंत्रण खो चुका था (34:1-31)। यह तथ्य रूबेन के पाप द्वारा प्रमाणित होता है, जिसने अपने पिता की रखैल-पत्नी बिलहा के साथ यौन-संबंध बना कर (35:22) अपने पिता को अपमानित किया। घराने में ही होने वाले इस दुष्कर्म के विरोध में हम न तो किसी दण्ड का और न ही पिता के द्वारा उल्हाना का एक भी शब्द कहे जाने का उल्लेख पाते हैं। प्रतीत होता है कि याकूब के पुत्र इस बात के लिए निश्चित थे कि उन्हें अपने क्रूर और अनैतिक आचरण के लिए कोई परिणाम नहीं भोगने पड़ेंगे; उनके कमज़ोर और निष्क्रिय पिता से उन पर दण्ड की कोई आज्ञा जारी नहीं होगी।

उनके अधर्म की गंभीरता उनके द्वारा निर्दयता से अपने भाई यूसुफ़ को गुलामी में बेचे जाने के द्वारा प्रदर्शित होती है। उनके आत्मा की भ्रष्टता उनके निर्मोही रीति से अपने पिता के हृदय को आहत करने से दिखती है, जब उन्होंने लहू से सने यूसुफ़ के अंगरखे को अपने पिता को दिखाया और उसे विश्वास दिलाया कि उसके पुत्र को किसी जंगली जानवर ने फाड़ खाया है (37:18-36)। इस में से अधिकांश वेदना याकूब स्वयं अपने ऊपर ले कर आया क्योंकि उसने परमेश्वर का मार्गदर्शन ढूँढने को अनदेखा किया था (देखें 33:17-19)। वर्षों तक उसने अपने परिवार को मूर्तिपूजा के खतरों (31:19, 34, 35) के बारे कोई शिक्षा नहीं दी। अन्ततः परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी कि वह बेतेल को जाए और अपने घराने से पराए देवताओं को निकाल फेंके (35:1-4)। परमेश्वर अपने अनुग्रह में याकूब और उसके पुत्रों के साथ कार्य तो करता रहा, परन्तु वह अपने पापों के परिणाम आने वाले अनेकों वर्षों तक उठाएंगे, जब तक कि परमेश्वर की भविष्य योजना का कार्य यूसुफ़ में होकर प्रकट नहीं होगा (45:1-50:26)।

यहूदा और उसके बेटे। अध्याय 38 प्रगट करता है कि परमेश्वर के लोगों के लिए कनान में, वहाँ की मूर्तिपूजा और व्याप्त अनैतिकता के कारण, रहना कितना खतरनाक था। अब्राहम के वंशजों के सामने सदा ही अपने मूर्तिपूजक अन्यजाति पड़ोसियों के विश्वास सिद्धांतों तथा जीवनशैली को अपना लेने का प्रलोभन रहता था। क्योंकि याकूब अपने बेटों को वह अनुशासन नहीं प्रदान कर पाया जिसकी उन्हें आवश्यकता थी, इसलिए इसमें कोई अचंभे की बात नहीं है कि उनके आस-पास विद्यमान उन अनेकों प्रलभनों के वे शिकार हो गए।

इसका एक आरंभिक उदाहरण हम यहूदा में देखते हैं, जो अपने भाइयों को छोड़कर चला गया। उसका चले जाना संकेत करता है कि वह अपने बड़े भाई रूबेन के नियंत्रण में, जो अपने पिता याकूब को जवाबदेह था, रहना नहीं चाहता

था। हठीला जवान पुरुष होने के कारण, वह परिवार के किसी भी हस्तक्षेप के बिना अपनी मनमानी करना चाहता था।

जब यहूदा अदुल्लामवासी हीरा के पास गया हुआ था, उसने एक आकर्षक युवती को, जो कनानी शुआ की पुत्री थी देखा। उतावला पुरुष होने के कारण, प्रकटतः उसने उसके विश्वास और नैतिकता की कोई जानकारी प्राप्त नहीं की; बस वह "उससे विवाह करके उसके पास चला गया" (38:2; "विवाह कर के"; NJPSV)। यहाँ प्रयुक्त शब्दों से संकेत मिलता है कि संभवतः उसने न तो उस लड़की के और न ही अपने अभिभावकों से कोई अनुमति या स्वीकृति प्राप्त की। प्रकट है कि उसे इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि परमेश्वर या उसके अभिभावक उसकी पसन्द की स्त्री के बारे में, जो उसके बच्चों की माँ बनेगी, क्या सोचते हैं।

यहूदा एक उदाहरण तथा चेतावनी है उन लोगों के लिए जो गलत कारणों से विवाह करते हैं। प्रभु में विश्वास तथा ईश्वरीय चरित्र की भीतरी सुन्दरता का स्थान बाहरी स्वरूप नहीं ले सकता। यहूदा अवश्य ही अब्राहम द्वारा इसहाक के लिए कनानी पत्नी ना लिए जाने के प्रयासों से अवगत रहा होगा (24:1-7)। निःसन्देह वह अपने पिता के किसी स्थानीय कनानी स्त्री से विवाह कर लेने की रिबका और इसहाक की परेशानी को जानता था (27:46-28:2)। लेकिन इन में से किसी भी बात ने उसे अपने जीवन के लिए चुने गए मार्ग से हटने के लिए हतोत्साहित नहीं किया। उसने, कम से कम अपने जीवन के प्रथम अर्ध-भाग में, अपने पिता की गलतियों से कुछ भी शिक्षा नहीं ली।

अनेकों जवान इस भ्रम को स्वीकार कर लेते हैं कि "यदि मैं कोई ऐसी पत्नी [या पति] ढूँढ लूँ जो मुझ से प्रेम करे और मुझे स्वीकार कर ले, तो मेरी समस्या का समाधान हो जाएगा।" वे इस तथ्य का सामना नहीं करते कि मनुष्यों की अधिकांश समस्याएं उनके अन्दर से ही आती हैं और उनके स्वार्थी रवैये और पापमय लालसाओं से निकलती हैं (मरकुस 7:21-23)। भीतरी पापों की अभिव्यक्ति अनुपयुक्त रीतियों से होती है जिन्हें कोई ठीक नहीं कर सकता है - न पति, न पत्नी, न बच्चे, न मित्र - कोई ठीक नहीं कर सकता है। यहूदा संभवतः अपने पिता, माता, भाइयों और परिवार के बन्धनों को पीछे छोड़ देना चाहता था। वह कनानियों से मिलने के लिए गया; और जब वहाँ वह उनकी एक पुत्री की ओर आकर्षित हुआ, तो उसने उससे विवाह कर लिया।

इस नए संबंध ने उसकी समस्याओं का कोई समाधान तो नहीं किया, वरन उन्हें बढ़ा दिया। एक के बाद एक उसके तथा उसकी पत्नी के तीन बेटे हुए। बिना किसी आत्मिक या नैतिक मार्गदर्शन के, ये बेटे बड़े होकर कुछ बातों में अपने अभिभावकों के समान बन गए। इस प्रकार इस पिता (जो यहोवा में एक नामधारी विश्वासी था) और माता (जो कनान की मूर्तिपूजक अन्यजाति थी) के पाप उनके बेटों पर आए। सभी पापों का दोष अभिभावकों पर नहीं डाला जा सकता है; प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का जवाबदेह होता है (यहेजे. 18:4, 20; रोमियों 6:23)। दूसरी ओर, यदि बच्चों को परमेश्वर से प्रेम करने, नैतिक

सिद्धांतों का पालन करने और आत्मिक धार्मिकता के बारे न सिखाया जाए, तो वे अपने आस-पास के परमेश्वरविहीन वातावरण की बातों का अनुसरण करने लगते हैं। संसार का तरीका "सही प्रतीत" होता है, परन्तु बहुधा उसका अन्त "मृत्यु का मार्ग" होता है (नीति. 14:12)।

आत्मिक खालीपन में बड़े होने के प्रभाव स्पष्ट हैं। यहूदा का पहला बेटा, एर, इतना दुष्ट था कि परमेश्वर ने उसको मार डाला (38:7)। लेख उन पापों का विवरण तो नहीं देता है जिनके कारण यह ईश्वरीय मृत्युदण्ड उस पर आया, परन्तु वे कुछ विशेष बुरे रहे होंगे जिस कारण परमेश्वर को उसे मारना पड़ा। अपने पीछे वह निःसन्तान विधवा तामार को छोड़ गया, जिसे यहूदा के दूसरे बेटे, ओनान को दिया गया। कोई विचार करेगा कि अपने बड़े भाई की असमय मृत्यु के कारण ओनान ने अपने जीवन के बारे में विचार किया होगा; परन्तु लगता है कि उसने उससे कोई शिक्षा नहीं ली थी। ओनान ने भी दुष्ट और स्वार्थी जीवन का व्यतीत किया।

ओनान ऐसा व्यक्ति नहीं था जो, व्यवस्था के अनुसार, अपने भाई के नाम सुरक्षित होता देख पाता। इस आत्माभिमानी, स्वार्थी भाई ने तामार को अपनी हवस के लिए तो प्रयोग किया, परन्तु उसे गर्भवती नहीं होने दिया क्योंकि वह सन्तान एर की गिनी जाती। अपने लालच में वह अपने पिता की विरासत तामार के बेटे के साथ बाँटना नहीं चाहता था। उसके इस व्यवहार से प्रभु बहुत अप्रसन्न हुआ और उसने ओनान को भी मार डाला।

यह परिच्छेद उन विश्वासी लोगों को परेशान करता है जो मृत्यु को अन्तिम त्रासदी मानते हैं। वे यह नहीं समझ पाते हैं कि प्रेमी परमेश्वर पापियों को क्योंकर मार डाल सकता है। परन्तु बाइबल सिखाती है कि प्रभु, हमारा सृजनहार, जो जीवन का दाता है वह जीवन ले लेने का अधिकार भी रखता है (अय्यूब 1:21)। कुछ के विचारों के विपरीत, मनुष्य के पास जीवन का कोई निर्णायक अधिकार नहीं है। "सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" और "पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है" (रोमियों 3:23; 6:23)। अनुग्रह से, परमेश्वर अधिकांश मानवजाति को जीवित रहने देता है, हालाँकि मृत्यु के साए में। चाहे मृत्यु किसी हिंसा के कारण आए, या बीमारी, या फिर बुढ़ापे के कारण, सभी मनुष्यों का मरना निर्धारित है; और उनके शरीर वापस मिट्टी में मिल जाते हैं, जहाँ से वे, आदम के वंशज होने के कारण, आए थे (2:7; 3:19; सभो. 12:7; रोमियों 5:12)। कभी कभी परमेश्वर ने हस्तक्षेप करके कुछ विशेष पापियों को मार डाल है, जैसा उसने एर और ओनान के साथ किया, और बाद में नादाब और अबीहू के साथ किया (लैव्य. 10:1-3)। जल-प्रलय के समय, मनुष्य की लगातार बनी रहने वाली बुराई तथा हिंसा के कारण, परमेश्वर ने लगभग सारी मानवजाति को मार डाला (देखें 6:5-13)।

जल प्रलय के पश्चात, परमेश्वर ने मनुष्यों को अपने लिए साधन की तरह नियुक्त किया जो दुष्टों पर सांसारिक न्याय लागू करें (9:6)। उस समय के बाद से बुराई करने वालों के घात करने के लिए, उसने पहले से कम हस्तक्षेप किया।

उसने ऐसा तब ही किया जब पाप इतना अधिक बढ़ गया कि मृत्युदण्ड देना लोगों को यह सिखाने के लिए अनिवार्य हो गया कि वे पाप में निःसंकोच बने नहीं रह सकते। यह दुष्ट राष्ट्रों के लिए सत्य था (निर्गमन 12:29, 30; 14:23-28; यहोशू 10:10, 11) और परमेश्वर के बलवई बच्चों के लिए भी (गिनती 14:36, 37; 16:25-35; 2 शमूएल 6:7; प्रेरितों 5:1-11)। परमेश्वर के कार्य संसार के सामने प्रदर्शित करते हैं कि वह "किसी मनुष्य का पक्ष नहीं करता" (प्रेरितों 10:34; KJV)। वह आवेश में मृत्युदण्ड नहीं देता, वरन "धैर्य रखता है, ... नहीं चाहता कि कोई मरे, परन्तु सब को पश्चाताप का अवसर मिले" (2 पतरस 3:9)।

उपरोक्त लेखों के आधार पर, लोगों को यह नहीं सोचना चाहिए कि परमेश्वर अपने न्याय में मनमौजी है या अपने द्वारा बुराई करने वालों को मृत्युदण्ड देने में अन्यायी है। निश्चय ही अब्राहम, इसहाक और याकूब ने दुष्ट नगरों सदोम और अमोरा पर परमेश्वर के न्याय की कहानी बताई होगी। यहूदा यह कैसे सोच सकता था कि एर तथा ओनान की मृत्यु कोई दुर्घटना थी, अन्यायपूर्ण थी, या किसी प्रकार से तामार उसकी दोषी थी? वह यह कैसे अनदेखा कर सकता था कि वे इतने दुष्ट हो गए हैं? क्या वह ऐसा पिता था जो कुछ देखना ही नहीं चाहता था, या उसने यह मान लिया था कि उनके पापों से कोई फ़र्क नहीं पड़ता?

उत्पत्ति का लेख संकेत करता है कि यहूदा और उसके भाइयों में बहुत पहले से ही आत्मिक अन्धापन आ गया था। हो सकता है कि यह उनके दादा इसहाक और ताऊ एसाव के विरुद्ध उनके पिता के पापों को जानने का प्रभाव हो। वे अपने पिता और लाबान के बीच रहने वाले झगड़े और छल के बारे में भी जानते थे। यहूदा और उसके भाइयों ने अपने पापों को न्यायसंगत समझने का रवैया विकसित कर लिया था, जैसा कि उनके शकेम के लोगों के विरुद्ध प्रतिशोध लेते समय और अपने भाई यूसुफ़ को दासत्व में बेचते समय दिखाई दिया। स्वयं को उचित ठहराने के कई वर्षों के प्रयास के कारण, यहूदा ने फिर से यही किया होगा जब उसके दोनों बेटे मार दिए गए। बजाय इसके कि वह उस सत्य का सामना करता कि वे अपने पापों के कारण मारे गए, संभवतः उसने उनकी मृत्यु का दोषी तामार को ठहराया। क्या वह शापित थी? उसे इस बात का भय था; इसलिए उसने उससे झूठ बोल कर उसे वापस उसके घर भेज दिया, इस व्यर्थ आशा के साथ कि शेला से वह पुत्र जन सकेगी (38:11)। यहूदा ने इस वायदे को पूरा करने का न तो कोई विचार था, और न ही यह कभी पूरा किया गया।

यहूदा और उसकी बहू। यहूदा के दो बेटों की मृत्यु के बाद काफ़ी समय बीत गया, और उसके जीवन में अगली दुःखद घटना थी उसकी पत्नी की मृत्यु। अब तक तामार को पता चल गया था कि यहूदा शेला को उसे पति के रूप में देने का कोई विचार नहीं रखता है। इसलिए, उसने एक साहसी योजना बनाई। जब यहूदा अपने भेड़ों की कतराई देखने के लिए तिम्नाथ को गया, तामार वेश्या का भेस बदल कर नगर के फाटक के पास जा बैठी जहाँ से यहूदा को तिम्नाथ की ओर

निकलना था।

जैसा तामार का पूर्वानुमान था, यहूदा ने समझा कि वह वेश्या है और उससे संबंध का प्रस्ताव किया। उसने कीमत चुकाने की ज़मानत के लिए उसके पास अपनी मुहर, बाज़ूबन्द और हाथ की छड़ी रेहन रख दी। उसने अपनी बहु के साथ यौन-संबंध स्थापित किए, जिससे वह गर्भवती हो गई और फिर वह अपने मार्ग चला गया। जब यहूदा ने निर्धारित कीमत भिजवाई ताकि वह अपनी रेहन उससे छुड़वा ले, वह वेश्या समझी जाने वाली स्त्री वहाँ नहीं थी। फिर तीन माह पश्चात, यहूदा को समाचार मिला कि तामार व्यभिचार के कारण गर्भवती है। उसने पहले तो उसके पाप के कारण उसे जला देने की आज्ञा दी; लेकिन जब उसने वे रेहन में रखी गई वस्तुएं दिखाईं - उसकी मुहर, बाज़ूबन्द और छड़ी - तो वह अपने पाप के विषय कायल हुआ। तब उसने बड़ा असाधारण वाक्य बोला: "वह तो मुझ से कम दोषी है; क्योंकि मैंने उसका अपने पुत्र शेला से विवाह न किया" (38:26)।

इस कथन का यह अर्थ नहीं है कि तामार, पाप से रहित या परमेश्वर के सामने न्यायसंगत होकर धर्मी थी। विचार यह है कि, यद्यपि यहूदा और तामार दोनों ही ने पाप किया, यहूदा का पाप तामार के पाप से बढ़कर था। पवित्रशास्त्र के कुछ व्याख्या करने वाले यह अस्वीकार करते हैं, इस आधार पर कि कोई पाप बड़ा या छोटा नहीं होता। लेकिन इसके विपरीत, यीशु ने पिलातुस के सामने खड़े होने के समय इस विषय का विशेषकर समाधान किया। महासभा के अगुवों ने, कैफ़ा की अगुवाई में, उसके विरुद्ध झूठे दोष लगाकर पाप किया था; और पिलातुस एक निर्दोष को मृत्युदण्ड देने के द्वारा पाप करने जा रहा था। यीशु ने कहा, "इसलिये जिसने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है, उसका पाप अधिक है" (यूहन्ना 19:11; देखें मरकुस 3:22-30)। यीशु का न्याय उत्पत्ति की कहानी के समान ही तुलनात्मक है।

यहूदा और तामार की कहानी हमें दोहरे मापदण्डों के प्रयोग के विरुद्ध सचेत करती है। यहूदा प्राचीन कनानी समाज में प्रतिष्ठित पुरुष प्रतीत होता है। उसके पास भेड़ों के झुण्ड थे और उनकी कतराई करने के लिए नौकर। इसके विपरीत, तामार ऐसी स्त्री थी जिसके पास न तो कोई धन-दौलत थी, न प्रतिष्ठा, अधिकार या कानूनी आश्रय का कोई विकल्प। जब यहूदा को उसके गर्भवती होने तथा उसके पुत्र शेला के प्रति विश्वासघाती होने के बारे में पता चला, तो वह उसे मार डालने को तैयार हो गया! उसके बच्चे के पिता के बारे में कोई जाँच-पड़ताल नहीं की गई और न ही उसको देने के लिए किसी दण्ड का कोई उल्लेख किया गया। जब तामार की गर्भावस्था में यहूदा के सम्मिलित होने को सार्वजनिक किया गया, दण्ड का विचार भी त्याग दिया गया। इस परिस्थिति में एक दोगला मापदण्ड अपनाया जा रहा था; स्त्री होने के नाते, तामार का न्याय उस पुरुष के मुकाबले अधिक कठोरता से किया जा रहा था, जिसने उसके साथ व्यभिचार किया था।

यीशु के वृतांतों में भी दोगले मापदण्ड देखने को मिलते हैं। उन्हें भी ऐसी ही

समस्या का सामना करना पड़ा था, जब एक स्त्री व्यभिचार में पकड़ी गई (यूहन्ना 8:3-11)। फरीसी उसे पथराव करके मार डालना चाहते थे क्योंकि उसके दोष में कोई सन्देह नहीं था। यहूदी अगुवे कुछ प्रासंगिक प्रश्नों को अनदेखा कर रहे थे: पुरुष कहाँ था? क्या उन्होंने किसी पुरुष को किराए पर लेकर उस से इस स्त्री को भ्रष्ट करवाया था जिससे कि उसे व्यभिचार करते हुए पकड़ें और इसे यीशु के विरुद्ध प्रयोग करें? वे लोग तो इसके बारे में चुप थे; उन्होंने यीशु से केवल यही पूछा कि व्यवस्था के अनुसार उस स्त्री का क्या किया जाए। पुरुष बच कर निकल गया था। जो इस स्त्री ने किया वह निःसन्देह पाप था, लेकिन यीशु ने उसे दोषी नहीं ठहराया। वह इस परिस्थिति में लागू किए जा रहे दोगले मापदण्डों को जानते थे। जो पुरुष उस स्त्री को, व्यवस्था के अनुसार, मृत्युदण्ड देने का दोषी पाते थे, वे उस तथ्य को अनदेखा कर रहे थे कि व्यवस्था दोषी पुरुष के लिए भी मृत्युदण्ड की माँग करती है (व्यव. 22:22)। यीशु ने उन पाखंडी यहूदी अगुवों से कहा, "तुम में जो निष्पाप हो, वही पहिले उसको पत्थर मारे" (यूहन्ना 8:7)। अपने स्वयं के पापों से दोषी ठहराए जाने के कारण, वे सब वहाँ से चले गए, अन्ततः यीशु और वह स्त्री ही वहाँ बचे रह गए। प्रभु को उसे दोषी ठहराने की आवश्यकता नहीं थी। वह पहले ही बहुत दोषी ठहर चुकी थी और शर्मिंदा थी। उसने अनुग्रहपूर्वक उससे कहा, "जा, और फिर पाप न करना" (यूहन्ना 8:11)।

उपसंहार। इस कहानी में परमेश्वर अदृश्य रूप से कार्यरत था: एक मूर्तिपूजक अन्यजाति स्त्री तामार के द्वारा उसने वाचा के अपने लोगों के पाखंड को प्रकट किया। यहूदा को, इससे पहले कि वह और उसके भाई यूसुफ़ के साथ मेल-मिलाप कर के मिस्र में फिर से एक परिवार हो पाते, नम्रता, पाप-बोध, अनुग्रह, और क्षमा के बारे में सीखना आवश्यक था। परमेश्वर के लोगों का भविष्य खतरे में था। क्या तामार बची रहकर इस्राएल के राजकीय घराने की पूर्वज बन पाती? क्या यहूदा कभी ऐसा व्यक्ति बनता जो अपने चुने हुए परिवार में परमेश्वर का खरा अगुवा होता? इन प्रश्नों का उत्तर तो गूंजता हुआ "हाँ" है। परमेश्वर अपनी दूरदर्शिता में, भले और बुरे दोनों के द्वारा अपने लोगों की भलाई के लिए कार्य कर सकता है (रोमियों 8:28)। यहूदा और तामार के बीच हुए अनैतिक कार्य से जुड़वाँ बच्चे, पेरेस और जेरह उत्पन्न हुए (38:29, 30)। पेरेस से बोआज़, जो रूत का पति हुआ; राजा दाऊद; और अन्ततः जगत का उद्धारकर्ता यीशु मसीह आए (देखें रूत 4:18-22; मत्ती 1:1-17)।

समाप्ति नोट्स

[1]गॉर्डन जे. वेनहेम, *जेनेसिस 16-50*, वर्ड बिबलिकल कमैंट्री, वाल. 2 (डलासः वर्ड बुक्स, 1994), 366. [2]इस इब्रानी नाम का उच्चारण ऐसा लगता है कि समय के साथ बदलता रहा है, और कृत्रिम व्यंजन א *(अलेफ़)* को इसमें जोड़ा गया है। (डेल डब्लयू. मेनर, "कज़ीब [स्थान]," *दि एंकर बाइबल डिक्शनरी*, इडी, में. डेविड नोएल फ्रीडमैन [न्यू यॉर्कः डबलडे, 1992], 1:904.) [3]नाम "एर" ער *(एर)* और शब्द "बुरा"/"दुष्ट" רע *(रा)* वही दो व्यंजन हैं, हालांकि उलट हैं। वेनहेम ने देखा यह सम्भवतः "एर" अनुवाद के शब्दों का ही खेल है। (वेनहेम, 366.) [4]अन्य लोगों के

उदाहरण जिनके पाप के कारण परमेश्वर उनको मौत दीः नादाब और अबीहू (लैव्य. 10:1-3), वे जिन्होंने मूसा के विरुद्ध बलवा किया था (गिनती 16:31-35), उज़्ज़ा (2 शमूएल 6:6, 7), और हनन्याह और सफ़ीरा (प्रेरितों 5:1-11)। [5]शब्द "लेविरैट" लतीनी भाषा के शब्द *लेविर* से लिया गया है, जिसका अर्थ है "पति का भाई" (अर्थात, "देवर")। यह इब्रानी शब्द יָבָם *(याबाम)* के बराबर है। [6]इस नियम का लागूकरण कभी कभी देवर से हटकर किसी नज़दीकी सम्बन्धी पर भी लागू होता था, जैसा कि रूत की पुस्तक इस बात का संकेत करती है (रूत 1:5; 3:12; 4:5, 10)। [7]कनान देश में सदियों से व्यापक रूप से उत्सवों में देवदासियों का लगातार फ़ैल रहा था (होशे 4:13, 14; 9:1, 2)। [8]थियोफाइल जे. मीक, ट्रांस., "दि मिडल असीरियन लॉज़," *एंशियंट नीयर ईस्टर्न टैक्स्ट रिलेटिंग टू दि ओल्ड टैस्टामेंट*, 3डी इड., N.J. जेमस बी. प्रिचार्ड (प्रिंसटोन, एनजे में: प्रिंसटोन यूनिवर्सिटी प्रैस, 1969), 183 (नं. ए40)। [9]रिबका, बतुएल (नाहोर का पुत्र) की पुत्री उत्तरपश्चिम मेसोपोटामिया से थी। जब वह कनान में आई और उसने इसहाक को अपने पास आते हुए देखा, उसने झट घूंघट डाल दिया। सम्भवतः उसने शालीनता के चिन्ह के रूप में घूंघट का प्रयोग किया (24:65)। [10]विक्टर पी. हैमिल्टन, *दि बुक ऑफ जेनेसिसः चैपटरस 18-50*, दि न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन दि ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगन: डब्ल्यूएम. बी. एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1995), 442-43.

[11]मीक, 184 (नं. ए43)। [12]पूर्वोक्त, 182 (नं. ए33): अल्ब्रेक्ट गोएट्ज़, ट्रांस., "दि हित्ती लॉज़," *इन एंशियंट नीयर ईस्ट टैक्टस*, 196 (नं. 2.193)। [13]इससे एक मिलते जुलते मामले में, बाद में मूसा की व्यवस्था ने मंगनी के दौरान व्यभिचार करने वाली को पत्थरों से मारने का आदेश दिया था (व्यव. 22:23, 24)। इसकी तुलना में, जलाकर मारना तो अन्तिम सीमा थी। यह दण्ड एक याजक की पुत्री के लिए था जो वेश्या बनकर भ्रष्ट हो गई थी, क्योंकि उसने स्वयं को और अपने पिता को भ्रष्ट किया था (लैव्य. 21:9)। [14]आज के आधुनिक समाज के अनेकों घरों में केवल एक ही अभिभावक होता है जो बच्चों के लिए माता और पिता दोनों ही की ज़िम्मेदारियाँ निभाता है। यह बहुत कठिन होता है और कभी-कभी बच्चों तथा नाती-पोतों के लिए इसके परिणाम दुखःद होते हैं।